सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 167

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 36
सितम्बर – 2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

पिछले महीनें में ही हम सब ने गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया, अब आगे दशहरा और दीपावली आने वाली है। इन त्यौहार का और गुरुपूर्णिमा का महत्व हमारे वं. दादाजी के लिए क्या था? इस बारे में उन्होंने ली हुई 1984–85 के समय की एक गुरुपूर्णिमा की मुलाकात इस प्रकार है।

'गुरुपूर्णिमा' यह उत्सव हम हर साल मनाते है। यह जन्म जो प्राप्त हुआ है, इसके बाद आगे नया जन्म प्राप्त होगा या नहीं इसकी शाश्वती नहीं है। नया जन्म प्राप्त हुआ तो फिर गुरुप्राप्ति होगी या नहीं यह एक सवाल है। गुरुप्राप्ति होने वाली होगी तो वह आने वाले कौन से जन्म में होगी यह समझना मुश्किल है। गुरुप्राप्ति होने पर श्री गुरु की कृपा से हमारे जन्म का सार्थक होता है इसमें कोई शंका नहीं है। लेकिन इस जन्म में गुरुभेट होने तक जो समय व्यर्थ गवाया उसका हमें पश्चाताप होता है, फिर भी अगले जन्म में ऐसा समय व्यर्थ न जाए इसकी तरतूद क्या हम इसी जन्म कर रहे हैं? यह सवाल है।

अनेक त्यौहार, उत्सव सालों साल हमारे जीवन में हम मनाते आए हैं। लेकिन क्या उन दिनों का असली में

महत्व क्या है, उसका हम विचार करते है? हर साल हम यह त्यौहार मनाते है लेकिन उसकी याद भी हमें नहीं रहती। हम mechanically उन्हें celebrate करते है क्योंकि यह त्यौहार हर साल आते है। लेकिन जिस जीवन में यह त्यौहार हम मानते है वह जीवन (जन्म) हमें फिर कब प्राप्त होने वाला है? इसका विचार अगर हमने किया तो सच्चे मतलब में हम दशहरा, दीपावली मना पाऐंगे। इन त्यौहारों की तरह गुरुपूर्णिमा भी हर साल आती है। गुरुपूर्णिमा का दिन गुरु के ऋणों की परफेक्ट (अदायगी/वापसी) करने के लिए है। उस दिन हम गुरुपूजन करते है तो द्रव्य माध्यम से (केवल विड़ा रखकर), लेकिन उससे गुरु ऋणों की अदायगी नहीं होती। जिनकी कृपा से हम सज्ञान हुए, जीवन में खड़े रह सके जीवन का सार्थक कर सके, उन गुरु के ऋणों की अदायगी हम कर ही नहीं सकते। अगर हम हमारे प्राप्त जीवन का एक भाग दूसरों के कल्याण के लिए दे सके तो ही इस गुरु ऋणों की अदायगी हम से प्रमाणों में हो सकती है। मेरे (वं. दादाजी) जीवन में पिछले पच्चास वर्षों से मैंने गुरुपूर्णिमा के दिन ही दशहरा और दीपावली मनाई। त्यौहार के दिन बच्चों ने सिर्फ नये कपड़े, गहने नहीं लिए तो सच्चे मायने में त्यौहार मनाए। उस दिन खुद को यह प्रश्न पूछता आया कि दशहरा मना रहे है लेकिन जीवन में सीमा लंघन (जतंदेवितउंजपवद) हुआ क्या? उसी प्रकार दीपावली मना रहा हूँ लेकिन जिस जगत में जन्म प्राप्त हुआ है, उस जगत को प्रकाश यानी ज्ञान मैंने यथोचित रूप से दिया क्या?इस प्रकार जीवन व्यतीत कर सके इसके लिए श्री सद्गुरु ने जिस दिन कृपा की, वह दिन गुरुपूर्णिमा है। लेकिन इस अनुभव का अनुभव लेने के लिए पच्चास सालों में श्री गुरु को कौन सी गुरु दक्षिणा दी?उसके लिए तन–मन और धन गुरु को देना होता है। यह धन यानी पैसा नहीं है। पैसों से जो खरीदा नहीं जा सकता ऐसा सब कुछ श्री गुरु को अर्पण करना होता है और ''ज्या ज्या ठिकाणी मन जाए माझे'' (जिस जिस जगह मेरा मन जाएगा) ऐसा यह मन भी श्री गुरु को अर्पण करना होता है। यह गुरुमार्ग का तत्व है। पिछले पचास साल मैंने (वं. दादाजी) एक ही गुरु का नाम लिया, उन्हीं का नामःस्मरण किया। जीवन में जो भी सुख–दुख आए वह भी उन्हीं की कृपा है और उन्हीं की कृपा से यह जो कार्य आपके सामने रखा है, वह कार्य करने की प्रेरणा भी उन्होंने दी है। इसी प्रकार मैंने उनकी हर एक आज्ञा का विचार(स्वीकार) कृपा समझकर किया। जीवन के आरंभ में ढ़ाई साल माधुकरी मांगकर सेवा की अन्य लोगों के हिसाब से वह दुख होगा लेकिन आज जितने भी सुखों का लाभ मुझे हुआ है, उससे भी कई अधिक सुखी मैं तब था।

मधुकरी मांगते समय वह उनके लिए (श्री गुरु के कार्य के प्रति) मांगी। भगवान के लिए भीख मांगने में भी बड़ा स्वाभिमान होता है।

पचास सालों से यह उत्सव मैं मनाता आ रहा हूँ। गुरुपूर्णिमा – यह त्यौहार मुझे अन्य सभी त्यौहारों से बड़ा लगता है। लोगों को हर साल दशहरा और दीपावली बड़ी लगती है। क्योंकि इन त्यौहारों में मिष्ठान खाने को मिलते हैं और मिठाई के साथ नए कपड़े, गहने, आदि मिलते हैं। दशहरा और दीपावली मैंने भी मनाई लेकिन वह मनाई गुरुपूर्णिमा के दिन, श्री गुरु का आशीर्वाद लेकर। मेरे श्री गुरु ने उनका नाम त्रिभूवन में अजरामर किया, वह शुभ दिन यानी दशहरा। मैंने हर साल दशहरे के दिन परम पूज्यनीय बाबा के पास ऐसी प्रार्थना की कि जगत को सुखी करने के लिए आशीर्वाद दीजिए। सैंकड़ों सालों से समाज अंध श्रद्धा में जी रहा है, उनके जीवन में सिमोलंघन कीजिए यह प्रार्थना आपके चरणों में पूरी जिंदगी मांगूगा, जिससे समाज जाग जाए और आपके नामःस्मरण में धूंद (मगन) हो जाए। उसी प्रकार दीपावली मनाई और प्रार्थना करता आया हूँ कि, 'हे ईश्वर ज्ञान दीजिए' उस ज्ञान से जो समाज अज्ञान के अंधेरे में जीवन व्यतीत कर रहा है, उनको दृष्टि प्राप्त हो, समाज को ज्ञानी यानी प्रकाशमय कीजिए। ऐसी प्रार्थना करते–करते आज पचास साल हो गए लेकिन अभी भी सच्चे मायने में दशहरा और दीपावली नहीं हुई है ऐसे मुझे (वंदनीय दादा) लगता है। फिर गुरु पूर्णिमा और गुरुपूजन कितना दूर है?इसका विचार कीजिए।

अब इसके आगे (आने वाले समय में) हमें सिर्फ गुरुपूर्णिमा का उत्सव ही नहीं मनाना है, बल्कि आने वाला दशहरा और दीपावली सही माइने में मनाने के लिए श्री गुरु का आशीर्वाद लेकर तैयार होना है। यह किया तो ही हमने गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया ऐसा कह सकते हैं। गुरु कृपा की स्तुती करना, कितने गाने गाए, भाषण करना इसमें सैकड़ों साल गुजर गए लेकिन श्री गुरु की कृपा सिर्फ गाने गाकर या भाषण करके प्राप्त नहीं होती। यह प्राप्त जीवन सिर्फ खुद के लिए नहीं है। खुद लिए केवल चार आना और बाकी बारह आना जीवन दूसरों के लिए है। यह जो बारह आना जीवन है, उसका विनियोग दूसरों के लिए किस प्रकार कर सकते हैं, यह बोध संज्ञान होकर आपको इस गुरुमार्ग में लेना है, ऐसी प्रार्थना प.पू. बाबा के चरणों में हमेशा करता आया हूँ। इसका कारण यह है कि जो सृष्टि निर्माण हुई है उसका शोध हम मानवों को अभी तक नहीं लगा है। प्राणी मात्रों की जानवरों के जन्मों की उत्क्रांती और मानवीय जन्म

की उत्पत्ति इस पर अनेक शास्त्रजनों ने खोज की है। लेकिन निश्चित रूप से अभी भी कोई शास्त्रज्ञ समाज को यह ज्ञान नहीं दे सका है। 'कर्मवाद' यह विषय हिंदू धर्म में आया। पुनर जन्म नहीं है ऐसे क्रिश्चन मानते है। मुस्लिम, जैन, बुद्ध, आदि जनों ने अपने अपने हिसाब से इन विषयों में वाद निर्माण किए फिर भी निश्चित रूप से आज कोई भी इन विषयों को प्रमाण नहीं दे सका है। पुरातन काल में देव धर्म यह विषय अस्तित्व में आया। लेकिन कौन से देवताओं की प्राप्ति किस मार्ग से करनी है इस प्रकार के कई विषयों का उत्तर आसानी से नहीं मिलता। इन विषयों की खोज करनी या देव देवताओं के जो अनेक रूप है और विविध पूजा पद्धति है उसे अंध श्रद्धा से अवलंबन (अनुसरण) करना, ऐसा सामान्य मानवों का सवाल होता है। इसका निरसण (हल) शास्त्रपरत्वे आज तक किसी ने नहीं किया है। इसीलिए प.पू. साईनाथ महाराज जी की कृपा से मानवता युग निर्माण करने की जिम्मेदारी आज हम सभी सेवकों की है, ऐसा मैं मानता हूँ। इसके लिए क्या करना चाहिए, वह आसान कार्य पद्धति सिद्ध करके समाज के सामने सभी धर्मों को मान्य हो। उसमें कोई एक धर्म श्रेष्ठ और दूसरा गौण ऐसे कहकर काम नहीं होगा। मार्ग ऐसा हो जिससे पूरे समाज का, सभी धर्मों के लोगों का कल्याण हो। यह मार्ग मानवीय जीवन के पुराने मत और नए विचार, इन दोनों को मान्य होना जरूरी है। ऐसा साधन सिद्ध करना जरूरी है। <u>यही वह गुरुमार्ग है।</u>

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

<u>Please send your yearly subscriptions as early as possible</u>